

## मंगलाचरणम्

卐

ॐ अलिमण्डलमण्डितगण्डतलं तिलकीकृत कोमल चन्द्रकलम् ।
करघात विदारित वैरिदलम् प्रणमामि गणाधिपतिं जटिलम् ॥

# मन्त्रानुष्ठान प्रकाशः

पूजन संस्कार विधि, विलक्षण, मंत्र-तंत्र एवं फलपूरक कवचों से अलंकृत सर्वप्रथम प्रकाशित प्रामाणिक ग्रन्थ


**पं० जवाहर लाल करमहे**

व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, ज्योतिषाचार्य, वेदाचार्य, कर्मकाण्डी एवं तांत्रिकेन

विरचितम्


*M.Katyayana*


प्रकाशक :

**श्री कामेश्वर करमहे**

साहित्यालंकार, कर्मकाण्डी

अवकाश प्राप्त संस्कृत शिक्षक

श्यामा चरण मिश्र लेन

वैद्यनाथधाम-देवघर ८१४११२ (झारखण्ड)

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
पं० जवाहर लाल करमहे
श्यामा चरण मिश्र लेन
वैद्यनाथ-देवघर ८१४११२
(झारखण्ड)

❐

मूल्य : पन्द्रह रुपये

❐



❐

प्रथम संस्करण, १०,०००
दीपावली, २००३

❐

मुद्रक:
श्री देवेन्द्रनाथ
श्री वैद्यनाथ प्रेस (ऑफसेट प्रिन्टर्स)
श्रीमती कौशल्या देवी पथ, देवघर
फोन : 222499

# भूमिका

मन्त्रशास्त्र आर्यावर्त (भारत) का एक ऐसा अद्‌भुत विज्ञान है जिसके अलौकिक चमत्कारों को सुन एवं देखकर सम्पूर्ण विश्व आश्चर्य चकित है। यह एक शाश्वत शास्त्र है। इस शास्त्र को नष्ट करने का प्रयत्न प्राचीन काल से दैत्यों एवं दानवों ने किया तथा वर्त्तमान में इतिहास को पढ़ें तो विदेशी आततायीयों ने भी किया फिर भी यह मन्त्र-शास्त्र सर्वशक्ति सम्पन्न हमारे सामने यथावत् उपस्थित है। इस शास्त्र की प्रतीत होनेवाली प्रभावहीनता का मुख्य कारण योग्य गुरु, ज्ञान एवं साधना का अभाव ही है। पुस्तक में लिखा मन्त्र सुषुप्तावस्था में रहता है अत: मन्त्र को जागृत करने के लिये साधना एवं विधिवत् पुरश्चरण की आवश्यकता होती है। आज कदाचित् ही कोई साधक इस प्रकार की कठिन साधना में प्रवृत्त होने का धैर्य नहीं रखता है। प्राचीन काल में हमारे ऋषि मुनियों ने मन्त्र सिद्धियां प्राप्त करके देवताओं को वश में करते थे तथा परकाय प्रवेश, जल, अग्नि स्तम्भन, आकाश गमन, अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति, मारण, मोहन, वशीकरणोच्चाटन शान्ति आदि शत्रुओं पर विजय असाध्य रोगों से मुक्ति, दीर्घ जीवन धन-धान्य इत्यादि अनेक अलौकिक प्रतीत होनेवाले कार्य इस मन्त्रशास्त्र द्वारा ही सम्भव होते थे। आज भी यदि साधक द्वारा नियम पूर्वक मन्त्र को सिद्ध कर लिया जाय तो कुछ भी असम्भव नहीं है। चूंकि अनेक शास्त्र हैं, बहुत सी विद्याऐं हैं, मनुष्य के पास अल्प समय हैं और बहुत सी विघ्न बाधाएँ हैं। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए आज के इस वैज्ञानिक युग में लोगों का कल्याण मन्त्र शक्ति के द्वारा किस ढंग से हो एवं इस शास्त्र के प्रति आस्था एवं दृढ़ विश्वास बनी रहे इसी उद्देश्य से हमने "मन्त्रानुष्ठान प्रकाश:" पुस्तक को प्रस्तुत करने का निश्चय किया है जिससे सर्वोपयोगी हो सके।

अपनी अल्पज्ञता को देखते हुए मैं यह नहीं कह सकता की इस

कार्य में मुझे कहां तक सफलता मिली है। यदि किसी विद्वान को कहीं कोई त्रुटि प्रतीत हो तो उनसे निवेदन है कि वे उससे अवगत कराने की कृपा करेंगे।

**यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।**
**न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥**

गीता-१६/२३

गीता में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं-
जो पुरूष शास्त्र की विधि को त्यागकर अपनी इच्छा से वर्तता है, धार्मिक कार्य करता है, वह न तो सिद्धि को प्राप्त होता है और न परमगति को तथा न सुख को ही प्राप्त होता है ।

पुस्तक प्रकाशन क्रम में हमारे पूजनीय पिता पं0 कामेश्वर करमहे एवं पूजनीया माता श्रीमती बाबु रानी देवी की सम्मति एवं परामर्श का अमृत पान कर ग्रंथ की रचना में मै अग्रसर होता रहा। अपनी सहकर्मिणी एवं अर्द्धांगिनी सरिता देवी की अनवरत सेवा का मोल तो कभी चुकाया ही नहीं जा सकता । अपने पुत्र द्वय चि0 प्रशान्त एवं चि0 आशीष के बाल सुलभ कौतुहल ने पुस्तक प्रणीत को आनन्दमय कर दिया ।

अन्त में मुद्रण प्रतिष्ठान के स्वामी श्री देवेन्द्रनाथ ने जिस लगन एवं अपनत्व से पुस्तक मुद्रण क्रम में अशुद्धियों का निदान एवं तकनीकी दृष्टि से पुस्तक का जिस प्रकार शोधन एवं परिमार्जन किया उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं ।

पं० जवाहर करमहे
वैद्यनाथधाम-देवघर

दीपावली
2003

卐卐卐

## विषय सूची

## विषय सूची







## सङ्कल्प की क्या आवश्यकता है।

**सङ्कल्पेन विना कर्म यत्किञ्चित् कुरुते नरः ।**
**फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धं क्षयो भवेत् ॥**

(भविष्य पुराणे)

जो मनुष्य सङ्कल्प के बिना जो कुछ भी धर्म कर्म करता है, उसे थोड़ा फल मिलता है, उसका आधा धर्म भी नष्ट हो जाता है।

**सङ्कल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्प सम्भवाः ।**
**व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः ॥**

(मनु २/३)

किसी काम को करने की इच्छा का मूल संकल्प है। इस काम से यह अभीष्ट फल सिद्ध किया जाता है, इस प्रकार की बुद्धि संकल्प है। संकल्प मूलक ही यज्ञ है संकल्प से ही यज्ञ होता है। व्रत नियमरूप धर्म सब संकल्प से ही होते हैं ।

**संकल्पं विधिवत्कुर्यात् स्नान-दान-व्रतादिके ।**

(मार्कण्डेय पुराण)

सङ्कल्प में प्रतिदिन मास, पक्ष तिथ्यादि का उच्चारण आवश्यक है, अन्यथा वह फल का भागी नहीं होता ।।

**सङ्कल्पेन विना देवि यत्किञ्चित्कुरुते सुधीः ।**
**व्यर्थमेव हि देवेशि तत्सर्वं मानसेन च ॥**

हे देवि, जो सुधी साधक संकल्प के बिना प्रकट या मानस कर्म करता है वह सब व्यर्थ होता है ।।

**संकल्प्य च तथा कुर्यात् स्नानदान व्रतादिकम् ।**
**अन्यथा पुण्य कर्माणि निष्फलानि भवन्ति हि ॥**

(आचारेन्दु मार्कण्डेय पुराण)

स्नान, सन्ध्या, दान, देवपूजन तथा किसी भी सत्कर्म के प्रारम्भ में संकल्प करना आवश्यक है । अन्यथा सभी कर्म निष्फल हो जाते हैं ।

## जप पूजादि में न्यास की आवश्यकता

**पूजा जपार्चना होमाः सिद्धमन्त्र कृता अपि ।**
**अङ्ग विन्यास विधुरा न दास्यन्ति फलान्यमी ॥**
(शारदातिलके टीका-४ पटल)

सिद्ध मन्त्र करने पर भी पूजन, जप, अर्चन तथा होमकर्म अंग न्यास के बिना फलप्रद नहीं होते है अतः अंगन्यास करन्यास अवश्य करनी चाहिए।

**न्यासं विना जपं प्राहुरासुरं विफलं बुधाः ।**
**न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवो भूत्वा तु तं यजेत् ॥**
(शारदा तिलक टीका-४ पटल)

पण्डितों ने न्यास के बिना किया हुआ जप आसुरी कहा है, न्यास के बिना निष्फल होता है। इसलिए न्यासादि द्वारा तदाकार बनकर अर्थात् देव स्वरूप होकर देवार्चन करना चाहिए-देवो भूत्वा देवान् यजेत्।

**न्यासहीनं तु यत्कर्म गृहणन्त्यर्द्धं तु राक्षसाः।**
(प्रतिष्ठा तिलक)

न्यास के बिना जो कर्म किया जाता है, उसका आधाफल राक्षस ले लेते हैं।

**मन्त्राक्षराणि विन्यसेद्देवताभसिद्धये ॥**
(शा0 पटल-4)

देव-भाव की सिद्धि के लिये मन्त्राक्षरों का यथा-स्थान न्यास करें ।

卐 卐 卐



## मुद्रा की क्या आवश्यकता है।

**मुदं राति ददातीति मुद्रा। अतएव तद्-दर्शनेन देवता हर्षोत्पत्तिः। स्वांगुल्यो हि पञ्चभूतात्मिका अंगुष्ठाद्या आकाश-वायवग्नि-सलिल-भू-रूपास्तासांमिथः संयोग-रूप-संकेतात् कोऽपि देवता-प्रगुणी भाव-पूर्वको मोदः सानिध्यकरो भवति ।**
(राघव भट्ट)

अंगुष्ठ आदि पांचों अंगुलियां क्रमशः आकाश, वायु अग्नि, जल और भू-तत्वात्मक है। अतः उनके संयोग से होनेवाले संकेतों-मुद्राओं द्वारा उन-उन तत्वों के मिश्रण के प्रभाव से देवता को हर्ष होता है और वह अपनी कृपा प्रदान करता है।

**मुद्राविना तु यज्जाप्यं प्राणायामः सुरार्चनम् ।**
**योगो ध्यानासनं चापि निष्फलानि तु भैरव ।**
(कालिका पुराण ७०/३३)

मुद्राओं के बिना जो भी जप, प्राणायाम्, देवार्चन, योग, ध्यान आसनादि किया जाता है, वह सब निष्फल होता है।

**मुदं कुर्वन्ति देवानां राक्षसान् द्रावयन्ति च ।**
(विष्णु संहिता)

'मुद्रा' प्रदर्शन से देवता प्रसन्न होते हैं। राक्षस भी 'मुद्रा' के प्रभाव से अनुकूल हो जाते हैं।

**मुदं कुर्वन्ति देवानां मनांसि द्रावयन्ति च ।**
(कुलार्णवतन्त्र-१७/५६, योगिनी हृदय १/५७)

**मोदनात् सर्व-देवानां द्रावणात् पाप सन्ततेः। तस्मान्मुदेयमाख्याता**

**सर्वकामार्थ-साधिनी। मुदं रातीति मुदा स्यात् येनैका मुष्टिरेवतु। स्वल्प भेदात् कोप-हर्षौ प्राणिनां जनयत्यतः। तेनैव सर्व देवानां मुदा हर्ष प्रदा मता ।**

(यामलतन्त्रे)

मुद्रा से सभी देवता प्रसन्न होते है एवं पाप का विनाश होता है इसीलिये इसको मुद्रा कहा गया है क्योंकि धर्मार्थ काम मोक्ष सभी कार्यों की यह सिद्धि प्रदा है। जिस एक मुष्टिका से भी प्रसन्नता होती है वही मुद्रा कहलाती है जिसके स्वल्प भेद से ही प्राणियों में भी हर्ष और विषाद उत्पन्न होता है । मुद्रा के द्वारा ही सभी देवता हर्षित होते है ।

卐卐卐

## पुरश्चरणस्यादौ गायत्री जपस्यावश्यकता का विद्यते
## पुरश्चरण के आदि में गायत्री जप की आवश्यकता क्या है।

**सर्वे शाक्ता द्विजाः प्रोक्ता न शैवा न च वैष्णवाः।**
**आदि देवीमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम् ॥**
**तस्मादादौ प्रयत्नेन गायत्रीं प्रयुतं जपेत् ।**
**यस्यकस्यापि मन्त्रस्य पुरश्चरणमारभेत् ।**
**व्याहृतित्रय संयुक्तां गायत्रीं चायुतं जपेत् ॥**
**विना जप्त्वा तु गायत्रीं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥**

सभी शाक्त द्विज हैं, शैव और वैष्णव द्विज नहीं हैं। क्योंकि शाक्त आदि देवी वेदमाता की उपासना करते हैं। इसलिये पुरश्चरण के आदि में दस लाख गायत्री जप करना चाहिए। किसी मन्त्र का पुरश्चरण साधक करे, उसे तो व्याहृतियों से युक्त गायत्री मन्त्र का दस हजार जप करना चाहिये। बिना



गायत्री का जप किए वह सब निष्फल हो जाता है।

## जप माला संस्कार परम आवश्यक है।

**अप्रतिष्ठित मालाभिर्मंत्रं जपति यो नरः ।**
**सर्वं तद्विफलं विद्यात् क्रुद्धा भवति देवता ।**

अप्रतिष्ठित माला से जो व्यक्ति जप करता है उसका वह सब फल निष्फल हो जाता है और देवता भी क्रुद्ध हो जाते हैं ।

卐卐卐

## पूजायां पञ्चाङ्ग शुद्धिः-ज्ञानार्णवे
## पूजा में पञ्चाङ्ग शुद्धि की आवश्यकता ।

**आत्मा स्थानं मन्त्र हव्ये देवशुद्धिस्तु पञ्चमी ।**
**यावन्न कुरुते देवि तस्य देवार्चनं कुतः ॥**
**पञ्चशुद्धिं विना पूजा ह्यभिचाराय कल्पते ॥**

ज्ञानार्णव तन्त्र में कहा गया है–
हे देवि, साधक जब तक (1) आत्मशुद्धि (2) स्थान शुद्धि (3) मन्त्र शुद्धि (4) हव्य (वस्तु) शुद्धि (5) देव शुद्धि इन पांच शुद्धियों को नहीं करता तब तक उसकी देवपूजा अभिचार का रूप धारण कर लेती है। अतः साधक पांच शुद्धियों को करके ही जप पूजादि कर्म करें ।
मन्त्र शुद्धि कैसे करें ?

**ग्रंथितां मातृका वर्णैर्मूल मन्त्राक्षराणि च ।**
**क्रमोत्क्रमाद् द्विरावृत्त्या मन्त्र शुद्धिरितीरिता ॥**

मूल मन्त्राक्षरों को मातृकाक्षरों से गुँथ कर क्रम और उत्क्रम से आवृत्ति करने

से मन्त्र की शुद्धि हो जाती है अत: मन्त्र शोधन करने के बाद ही जप करें।। मन्त्र सिद्धि करने के पूर्व मन्त्रों का दश संस्कार अवश्य कर लें ।

**मन्त्राणां दश संस्काराः कथ्यन्ते सिद्धि दायिनः।**
**जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधनं तथा ।**
**अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायने पुनः।**
**तर्पणं दीपनं गुप्तिश्चैताः स्युर्मन्त्र संस्क्रियाः।।**

सिद्धि देनेवाले मन्त्रों के दश संस्कार हैं। जनन, जीवन, ताडन, बोधन, अभिषेक, विमली करण, आप्यायन, तर्पण, दीपन तथा गुप्ति ये दशमन्त्रों के संस्कार हैं ।

**ध्यानस्य का आवश्यकता**

**ध्यान की क्या आवश्यकता है।**

**ध्यानेन मन्त्र सिद्धिस्यात् ध्यानं सर्वार्थ साधनम् ।**
**ध्यानेन विना भवेत् मूको सिद्धमन्त्रोऽपि पुत्रक! ।।**

ध्यान के द्वारा मन्त्र की सिद्धि होती है ध्यान से चतुर्विध की प्राप्ति होती है। हे पुत्र ! सिद्ध मन्त्र भी ध्यान के बिना (मूक) गुंगा हो जाता है अत: मन्त्रानुसार उस देवता का ध्यान अवश्य कर लेना चाहिये।

## युग भेदेन देवता भेदः युगानुसार देवता का महत्व ।

**ब्रह्मा कृतयुगे देवस्त्रेतायां भगवान रविः ।**
**द्वापरे भगवान विष्णुः कलौ देवो महेश्वरः।।**
(पूजा स्कन्धे)

पूजा स्कन्ध के अनुसार सतयुग में ब्रह्मा देवता की पूजा होती है, त्रेता में



सूर्य की, द्वापर में भगवान विष्णु की तथा कलियुग में महेश्वर अर्थात शिव की महत्ता है इस कारण उन्हीं की पूजा होती है।

**विनियोगस्य का आवश्यकता वर्त्ति ।**

**विनियोग की क्या आवश्यकता है ।**

**ऋषि छन्दो परिज्ञानान्न मन्त्र फलभाग् भवेत् ।**
**दौर्बल्यं चापि मन्त्राणां विनियोगमजानताम् ।।**

किसी भी मन्त्र जप करने के पूर्व उस मन्त्र के ऋषि छन्द देवता को जान लेना चाहिए। जो साधक उस मन्त्र के ऋषि, छन्द, देवता एवं विनियोग को नहीं जानता है अथवा विनियोग नहीं करता है तो वह मन्त्र दुर्बल, शक्तिहीन हो जाता है अत: जप के पहले विनियोग अवश्य कर लें।

**दक्षिणायाः महत्त्वम् ।**

**दक्षिणा का महत्व ।**

**दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते दक्षिणावन्तः प्रतिरन्त आयुः**
(ऋग्वेद १/१२५/६)

ब्राह्मणों को दक्षिणा देनेवाले मनुष्य अमरता और दीर्घायु को प्राप्त करते हैं।

**यज्ञो दक्षिणया सार्धं पुत्रेण च फलेन च ।**
**कर्मिणां फलदाता चेत्येवं वेदविदो विदु :।।**
(देवी भागवत ९/४५/५०)

दक्षिणा से युक्त यज्ञ पुत्ररूप फल के साथ कर्मियों (यजमानों) को फल प्रदान करता है, ऐसा वेदवेत्ता पुरूष जानते हैं।

**शुभोवा एता यज्ञस्य यद्दक्षिणाः ॥**
(ताण्ड्य ब्राह्मण: १६/१/६४)

यज्ञादि के अन्त में जो दक्षिणा दी जाती है, वही यज्ञ का शुभ कर्म है ।

**'दक्षिणा दक्षतेः समर्धयति कर्मणः वृद्धिं समर्धयतीति'।**

यज्ञ-कर्म में प्रमादवश जो कुछ न्युनता रह जाती है उसकी दक्षिणा वृद्धि कर पूर्ण कर देती है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के गणपति खण्ड (७/२३) में महादेव जी पार्वती से कहते हैं-

**'सर्वेषां कर्मणां देवि! सारभूता च दक्षिणा'।**

अत: कल्याणेच्छुक यजमान को चाहिये कि वह यज्ञान्त में प्रचुर मात्रा में ब्रह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे ।
साम्ब पुराण में यजमान के लिये आदेश भी किया गया है-

**'दक्षिणाः सर्वयज्ञानां दातव्या भूतिमिच्छता' ॥**

समस्त यज्ञों में दक्षिणा देने की आवश्यकता है, अत: अपने कल्याण के लिये दक्षिणा देनी चाहिये ।

स्वायम्भू पुराण में लिखा है-

**दानकर्म विवाहेषु देवार्चने विशेषतः।**
**यज्ञे तीर्थेऽभिषेके च दक्षिणा शुद्ध्यते सदा ॥**



**तस्माच्च दक्षिणा देया कर्म समाप्त कारिका ।**
**यावद् दक्षिणा हीनैव तावत्कर्म फलं नहि ।**
**यथायथा बहुं दद्यात्तथा तथा फलं लभेत् ।**
**यथायथा स्वल्पं दद्यात्तथा तथा फलं लभेत् ॥**
**आयुरारोग्य कल्याणं शुभंच सुखसम्पदम् ।**
**सर्वत्र सर्वदा भद्रं ददाति दक्षिणा शुभा ॥**

दान, कर्म और विवाह में, विशेष करके देवता पूजन में, यज्ञ, तीर्थ और अभिषेक में दक्षिणा सदा शुद्ध होती है। इसलिये कर्म की समृद्धि कारिणी दक्षिणा देनी चाहिये। जबतक दक्षिणा नहीं होती है तबतक कर्मफल नहीं होता। यजमान जैसी-जैसी प्रचुर दक्षिणा देता हे वैसा-वैसा कर्मफल प्राप्त करता है। अच्छी (प्रचुर) दक्षिणा सर्वत्र सदा आयुष्य, आरोग्य, कल्याण, ऐहिक मङ्गल और पारलौकिक मङ्गल देती है।

卐卐卐

## दक्षिणारहित यज्ञ का निषेध

जिस यज्ञ में आचार्यादि ऋत्विजों को विधि पूर्वक दक्षिणा नहीं दी जाती, उस यज्ञ को 'तामस' कहते हैं। शास्त्रों में दक्षिणाहीन यज्ञ को तामस बतलाते हुए कहा है कि दक्षिणाहीन यज्ञ व्यर्थ होते हैं। तथा-

**'यज्ञश्च दक्षिणाहीनः सवितुर्न प्रशस्यते'**
(साम्ब पुराण ३४/२९)

**'अध्वरं दक्षिणाहीनं निष्फलं च निगद्यते'।**
**'हतं यज्ञमदक्षिणम्'।** (देवी भागवत ९/४४/१५)
**'हतयज्ञो ह्यदक्षिणः।'**

**'मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः।** (पंच तन्त्र, मित्र सम्प्राप्ति)

भागवत की सुविख्यात वंशीधरी टीका (४/६/५०) में भी दक्षिणाहीन यज्ञ के बारे में लिखा है-

**'योगो ऽ मन्त्रो ऽ दक्षिणश्च न फलं दास्यति क्वचित् ।'**

'जो यज्ञ मन्त्रहीन और दक्षिणाहीन होता है, वह कभी भी फल प्रद नहीं होता । मत्स्य पुराण में दक्षिणा रहित यज्ञों से होनेवाली हानियों का इस प्रकार उल्लेख किया गया है।

**न कुर्याद् दक्षिणाहीनं वित्तशाठ्येन मानवः।**
**अददल्लोभतो मोहात् कुलक्षयमवाप्नुते ॥**
**अन्नदानं यथा शक्त्या कर्त्तव्यं भूतिमिच्छता ।**
**अन्नहीनः कृतो यस्माद् दुर्भिक्ष फलदो भवेत्॥**
**अन्नहीनो दहेद्राष्ट्रं मन्त्रहीनस्तु ऋत्विजः॥**
**यष्टारं दक्षिणाहीनः नास्ति यज्ञ समोरिपुः॥**
(63/१०९-१११)

मनुष्य कृपणता के कारण दक्षिणा हीन यज्ञ न करे, मोह और लोभ से दक्षिणा के बिना यज्ञ करने से कुलक्षय को प्राप्त होता है। ऐश्वर्याभिलाषी पुरूष को यज्ञ में अन्नदान करना चाहिये क्योंकि अन्न से हीन यज्ञ दुर्भिक्ष को उत्पन्न कर राष्ट्र का भी संहार करता है, मन्त्रहीन यज्ञ ऋत्विजों का और दक्षिणा हीन यज्ञ यजमान का नाश करता है । इसलिये अविधि अनुष्ठित यज्ञ के सदृश दूसरा शत्रु भी कोई नहीं है। ब्रह्म वैवर्त पुराण में दक्षिणारहित यज्ञ करनेवाले को पापी और पुण्यहीन कहा गया है।



**यत्कर्म दक्षिणाहीनं कुरुते मूढधीः शठः ।**
**स पापी पुण्यहीनश्च.........................॥** (गणपति खण्ड २३/३६)

जो मूर्ख मनुष्य दक्षिणाहीन कर्म करता है वह पापी और पुण्यहीन कहा जाता है।

**कृत्वा कर्म च कर्ता च तूर्णं दद्याच्च दक्षिणाम् ।**
**तत्क्षणं फलमाप्नोति वैदेरुक्तमिदं मुने ॥**
(देवी भागवत ९/४५/५३)

हे मुने ! कर्मकराकर ब्राह्मणों को शीघ्र दक्षिणा देने से यजमान को तत्काल फल की प्राप्ति होती है, ऐसा वेदों में कहा गया है।

## यज्ञादि में तत्काल दक्षिणा न देने से हानि

**कर्ता कर्मणि पूर्णेऽपि तत्क्षणात् यदि दक्षिणाम् ।**
**न दद्यात् ब्राह्मणेभ्यश्च दैवेनाज्ञानतो ऽ थवा ॥**
**मुहूर्ते समतीते च द्विगुणा सा भवेद् ध्रुवम् ।**
**एकरात्रे व्यतीते तु भवेद्दसगुणा च सा ॥**
**त्रिरात्रे वै दसगुणं सप्ताहे द्विगुणा ततः ।**
**मासे लक्षगुणा प्रोक्ता ब्राह्मणानां च वर्द्धते ॥**
**संवत्सरे व्यतीते तु सा त्रिकोटि गुणा भवेत् ।**
**कर्म तद् यजमानानां सर्वं वै निष्फलं भवेत ॥**
**स च ब्रह्मस्वापहारी न कर्मार्होऽ शुचिर्नरः ।**
**दरिद्रो व्याधियुक्तश्च तेन पापेन पातकी ॥**
**तद् गृहाद्याति लक्ष्मीश्च शापं दत्वां सुदारुणम् ।**
**पितरो नैव गृह्णन्ति तद्दत्तं श्राद्धतर्पणम् ॥**
**एवं सुराश्च तत्पूजां तद्दतां पावकाहुतिम् ।**
**दाता ददाति नो दानं ग्रहीता तन्न याचते ॥**

**उभौ तौ नरकं यातश्छिन्नरज्जुर्यथा घटः ।**
**नार्पयेद् याजमानश्चेद् याचितारं च दक्षिणाम् ॥**
**भवेद् ब्रह्मस्वापहारी कुम्भीपाकं व्रजेद् ध्रुवम् ।**
**वर्षलक्षं वसेत्तत्र यमदूतेन ताडितः ॥**
**ततो भवेत् स चाण्डालो व्याधियुक्तो दरिद्रकः ।**
**पातयेत् पुरुषान् सप्त पूर्वान् वै पूर्वजन्मनः ॥**
(ब्रह्मवैवर्त प्रकृति खण्ड ४२/५४-६३)

यज्ञादि कर्म के पूर्ण हो जाने पर भी दैववश अथवा अज्ञानवश ब्राह्मणों को दक्षिणा न देने से प्रतिक्षण वह दक्षिणा द्विगुणित हो जाती है। एकरात बीत जाने पर वह छगुनी, तीन रात बीत जाने पर दसगुनी, सात रात बीत जाने पर बीसगुनी, एकमास बीतने पर लाखगुनी, एक वर्ष बीतने पर तीन करोड़ गुनी बढ़ जाती है और साथ ही यजमान का किया हुआ सम्पूर्ण कर्म भी सर्वथा निष्फल हो जाते है। वह यजमान ब्रह्ममांश का चोर, सत्कर्मों का अयोग्य, अपवित्र होकर उसी भयङ्कर पाप से दरिद्र और व्याधियुक्त हो जाते हैं। उसके घर से लक्ष्मी भी कठिन शाप देकर अन्यत्र चली जाती है। पितृगण भी उसके दिये हुवे श्राद्ध तर्पणादि को ग्रहण नहीं करते और देवगण उसकी पूजा तथा आहुति स्वीकार नहीं करते। देनेवाला दक्षिणा ने देवे और पानेवाला याचक उससे दक्षिणा का तगादा न करें, ऐसी स्थिति में जिस प्रकार रस्सी के टूट जाने से भरा हुआ घड़ा जल में डूब जाता है उसी प्रकार दाता और ग्रहीता दोनों ही नरक को प्राप्त करते हैं। जो यजमान अपने वृत याचक के मांगने पर भी दक्षिणा नहीं देता, वह ब्राह्मणांश का चोर होकर निश्चय ही 'कुम्भीपाक' नामक नरक में जाता है। वहाँ जाकर एकलाख वर्ष तक यमदूतों की ताड़नाओं को सहता हुआ अन्त में व्याधि युक्त, दरिद्र तथा चाण्डाल योनि में उत्पन्न होकर अपने पूर्व की सात पीढ़ियों को पतित कर देता है ।

卐卐卐



## आचमन विधि

प्रथम पूजन सामग्री एकत्र करके शुद्धासन पर उत्तर ईशान या पूर्व की ओर मुख करके तीन बार आचमन करना चाहिये। आचमन से हम अपनी ही शुद्धि नहीं करते, अपितु ब्रह्मा से लेकर तृणतक को तृप्त कर देते हैं। आचमन न करने से हमारे समस्त कृत्य व्यर्थ हो जाते हैं।

लांग लगाकर, शिखा बांधकर उपवीती होकर और घुटनों के भीतर हाथ को रखकर जल इतना लें कि ब्राह्मण के हृदय तक, क्षत्रिय के कण्ठतक, वैश्य के तालु तक और शुद्र तथा महिला के जीभ तक पंहुच जाय। हथेली को मोड़कर गौके कान की तरह बना लें। कनिष्ठिका और अंगूठे को अलग करले शेष अंगुलियों को सटाकर अंगूठे के मूल (ब्राह्मतीर्थ) से निम्नलिखित एक-एक मन्त्र बोलते हुये आचमन करें जिसमें आवाज न हो। आचमन के समय बायें हाथ की तर्जनी से दायें हाथ के जल का स्पर्श कर ले तो सोमपान का फल मिलता यथा-

**दक्षिणे संस्थितं तोयं तर्जन्या सव्य पाणिना ।**
**तत्तोयं स्पृशते यस्तु सोम पानफलं लभेत् ॥**

ऊँ केशवाय नमः, ऊँ माधवाय नमः, ऊँ नारायणाय नमः। आचमन के बाद अंगूठे के मूलभाग से होठों को दो बार पोछकर ऊँ हृषिकेशाय नमः बोलकर हाथ धो लें। उसके बाद पवित्री करण, आसन शुद्धि पवित्रीधारण तिलक धारण स्वस्तिवाचन तत्पश्चात संकल्प करें ।

## संकल्प

दाहिने हाथ में कुश तिल हर्रे पुष्प द्रव्य अक्षत गंगाजल लेकर संकल्प कर नीचे पात्र पर छोड़ें-यथा

ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुराण पुरूषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्याद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे आर्यावर्ते जम्बू द्वीपे भरत खण्डे (अङ्क) प्रदेशे विक्रमशके बौद्धावतारे (अमुक) नगरे, क्षेत्रे, ग्रामे (अमुक) अयने (अमुक) गोले (अमुक) ऋतौ (अमुक) मासे ........ पक्षे..........तिथौ........वासरे (अमुक) गोत्रः (अमुक) शर्मा/वार्मा/गुप्तोऽहम् मम शरीरोपस्थित शरीराविरोधेन जन्मकालिक जन्मलग्नावधिक वर्षकालिक वर्षलग्नावधिक गोचर कालिक गोचर लग्नावधिक कुण्डल्यां संसूचितं संसूचयिष्यमानं यत्र तत्र दुष्ट स्थान स्थित सूर्या दिनवग्रहोपग्रह जनित शेषानिष्ट कष्ट प्रशमन पूर्वकं कायिक वाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञात पापक्षय इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकल पाप क्षयार्थं सत्वर (अमुक) देव देवी प्रसादेन दीर्घायुः बलपुष्टि नैरूज्याद्यखिल कल्याणेत्पत्ति कामनया धन धान्य सुख ऐश्वर्य समृद्ध्यर्थम्। अप्राप्यलक्ष्मीः प्राप्त्यर्थं तस्याः लक्ष्म्याः चिरकाल संरक्षणार्थञ्च (अमुक) संख्यक जपम् अद्यारभ्य यथाकाल पर्यन्तमहं करिष्ये वा (कारयिष्ये)

ऊँ यज्जग्रतो इत्यादि...............।
ऊँ मत्संकल्पितार्थाः सिद्धयः सन्तु इत्यादि ॥

卐 卐 卐



## लक्ष्मी प्राप्तये
## गणेश मन्त्र प्रयोगः

"ऊँ श्रीं ह्रीं क्लिं ग्लौं गं"
अस्य श्री गणेश मन्त्रस्य गणक ऋषिर्निचृड् गायत्री छन्दो गंबीजम् स्वाहा शक्तिः ग्लौं कीलकं लक्ष्मी प्राप्तये विनियोगः।
शिरसि-गणक ऋषये नमः।
मुखे-निचृड् गायत्री छन्दसे नमः।
गुह्ये-गं बीजाय नमः।
पादयोः-ऊँ स्वाहा शक्तये नमः।
सर्वाङ्गेषु-ऊँ ग्लौं कीलकाय नमः।

## अथ कराङ्ग न्यास

ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां हृदयायनमः। अंगुष्ठाभ्याम् नमः
ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गीं शिरसे स्वाहा। तर्जनीभ्याम् स्वाहा
ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गूं शिखायै वषट्। मध्यमा भ्यां वषट।
ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गैं कवचाय हूम् । अनामिकाभ्यां हूम्
ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्। कनिष्ठिका भ्यां वौषट्।
ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गः करतलकर पृष्ठाभ्याम् अस्त्राय फट्।

## अथ ध्यानम्

ऊँ सिन्दूराभं त्रिनेत्रं पृथुतर जठरं हस्त पद्मैर्दधानम् ।
दन्तं पाशां कुशेष्टा न्युरूकर विलसद्बीजपूर्णी पूर्णकुम्भम् ॥
बालेन्दुद्यौत मौलीं करिपतिवदनं दानपुरार्दगण्डम्।
भोगीन्द्राबद्धभूषं भजत गणपतिं रक्तवस्त्राङ्गरागम्॥

## अथ महामृत्युञ्जय मन्त्र प्रयोगः

**महामृत्युञ्जय वक्ष्ये दुरितापन्निवारणम् ।**
**यं प्राप्य भार्गवः शम्भोर्मृतान् दैत्यान जीवयन् ॥**

पाप एवं विपत्ति को दूर करने वाले महामृत्युञ्ज मन्त्र को कहता हूँ जिसे भगवान शंकर से प्राप्त करके शुक्राचार्य ने मरे हुये दैत्यों को जीवित किया था।

### मन्त्र-

**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यज्जामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। भू र्भुवःस्वः रों जूं सः हौं ॐ॥**

**ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वसिष्ठा ऋषयः। पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि । सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रोदेवताः । श्रीं बीजम् ह्रीं शक्तिः। महामृत्युञ्जय प्रीतये जपे विनियोगः।**

### ऋष्यादि न्यासः-

**ॐ वामदेव कहोल वसिष्ठ ऋषिभ्यो नमः-शिरसि ।**
**ॐ पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः-मुखे ।**
**ॐ सदाशिव महामृत्युञ्जय रुद्रदेवताभ्यो नमः-हृदि ।**
**ॐ श्रीं बीजायनमः-गुह्ये । ॐ ह्रीं शक्तये नमः-पादयोः।**
**ॐ विनियोगाय नमः-सर्वाङ्गे ॥ इति ऋष्यादि न्यासः॥**

### हृदयादिषडङ्ग-न्यासः-

**ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमोभगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा-हृदयाय नमः॥**



**ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय-शिरसे स्वाहा ।**
**ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द शिरसे जटिने-शिखायै वषट् ॥**
**ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं-कवचाय हुं ॥**
**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय-नेत्रत्रयाय वौषट् ॥**
**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय फट् ॥**

### करन्यासः-

**ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल पाणये स्वाहा-अङ्गुष्ठाभ्याम् नमः ॥**
**ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः॥**
**ॐ हौं ॐ जूं सं: भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॐ नमोभगवते रुद्राय चन्दशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्याम् नमः॥**
**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ॥**
**ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥**
**ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः॥**

## मन्त्र वर्णन्यास-

ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यं नमः-पूर्व मुखे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः-पश्चिम मुखे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः-दक्षिण मुखे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः-उत्तर मुखे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः जां नमः-उरसि ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः मं नमः-कण्ठे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः हें नमः-मुखे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुं नमः-नाभौ ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः गं नमः-हृदि ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः धिं नमः-पृष्ठे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः पुं नमः-कुक्षौ ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः ष्टिं नमः-लिङ्गे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः-गुदे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः र्धं नमः-दक्षिणोरुमूले ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः नं नमः-वामोरुमूले ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः उं नमः-दक्षिणोरुमध्ये ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः र्वां नमः-वामोरुमध्ये ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः रुं नमः-दक्षिणजानुनि ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः-वामजानुनि ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः मिं नमः-दक्षिणजानुवृत्ते ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः मिं नमः-वामजानुवृत्ते ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः-दक्षिणस्तने ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः धं नमः-वामस्तने ॥



ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः नान्नमः -दक्षिण पार्श्वे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः-बामपार्श्वे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्योर्नमः-दक्षिणपादे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः मुं नमः-बामपादे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः क्षीं नमः-दक्षकरे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः यं ममः-बामकरे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः मां नमः-दक्षनासायाम् ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः-वामनासायाम् ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः तान्नमः -मूर्ध्नि ॥

## पदन्यासः-

ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं नमः-शिरसि ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे-भ्रुवोः॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं-नेत्रयोः ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः पुष्टिवर्धनं-मुखे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकं-गण्डयोः ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः इव-हृदये ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः बन्धनात्-जठरे॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योः-लिङ्गे ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः मुक्षीय-उर्वो ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः मां-जान्वोः ॥
ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः अमृतात्-पादयोः ॥

## महामृत्युञ्जय ध्यानम्-

ऊँ हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयंतं शिरो ।

द्वाभ्यांतौ दधतं मृगाक्षवलयं द्वाभ्यां वहन्तं परम् ॥
अंकन्यस्त कर द्वयामृत घटं कैलासकांतं शिवम् ।
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दु मुकुटं देवंत्रिनेत्रं भजे ॥

ॐ हस्ताम्भोज युगस्थ कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः।
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके स कुम्भौ करौ ॥
अक्षस्त्रक्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्दस्त्रवत् ।
पीयूषोन्नततनुं भजं सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम् ॥

ॐ चन्द्रोद्भासित मूर्द्धजं सुरपतिपीयूषपात्रंवहत् ।
हस्ताब्जेनदधत्सुदिव्यममलं हास्यस्यपङ्केरुहम् ॥
सूर्येन्द्वग्नि विलोचनं करतलः पाशाक्षसूत्रांकुशा-
म्भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् ॥

जपान्ते मृत्युञ्जयस्य दक्षहस्ते जप समर्पणं कुर्यात् ।
ॐ गुह्याति गुह्य गोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥

卐 卐 卐

पुनः कराङ्गन्यासंध्यानञ्च कृत्वा पुष्पांञ्जलिं
दद्यात् ! ॐ यज्ञेनयज्ञमय....ॐ नाना सुगन्धि पुष्पाणि...
प्रार्थयेत्-ॐ मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम् ।
जन्ममृत्यु जरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ॥
तावकस्त्वद् गत प्राणस्त्वच्चित्तोहं सदा मृड ।
इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मृत्युञ्जयं परम् ॥
ततो विसर्जयेत् ॥



## अथ त्र्यक्षरात्मक लघु मृत्युञ्जय प्रयोगः
## ( मन्त्रमहोदधौ शारदा तिलकेच )

**"ॐ हौं जूं सः"**

अस्य त्र्यक्षरात्मक मृत्युञ्जय मन्त्रस्य कहोलऋषिः गायत्री छन्दः।
मृत्युञ्जयो महादेवो देवता। जूं बीजम् । सः शक्तिः ।
सर्वेष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥

### अथ ऋष्यादिन्यासः-

ॐ कहोलर्षये नमः-शिरसि । ॐ गायत्री छन्दसे नमः-मुखे
ॐ मृत्युञ्जय महादेवतायै नमः-हृदि। ॐ जूं बीजाय नमः- गुह्ये।
ॐ सः शक्तये नमः-पादयोः । ॐ विनियोगाय नमः-सर्वाङ्गे॥

### करन्यासः

ॐ सां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ सैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्याम्-नमः। ॐ सःकरतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

### अथ हृदयादिन्यासः-

ॐ सां हृदयाय नमः । ॐ सीं शिरसे स्वाहा । ॐ सूं शिखायै वषट्।
ॐ सैं कवचाय हूँ । ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ सः अस्त्राय फट् ॥

## अथ ध्यानम्

ॐ चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितम् ।
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलासत्पाणिं हिमांशु प्रभम्॥
कोटीरेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादि भूषोज्ज्वलं ।
कान्त्याविश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ॥

卐卐卐

## अथ मृत्युञ्जय कवच प्रारम्भः

भैरव उवाच । श्रृणुष्वपरमेशानि कवचं मन्मुखोदितम् ।
महामृत्युञ्जयस्यास्य न देयं परमाद्भुतम् ॥
यं धृत्वा यं पठित्वा च यं श्रुत्वा कवचोत्तमम् ।
त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽस्मि महेश्वरि ॥
तदेव वर्णयिष्यामि तव प्रीत्यावरानने ।
तथापि परमं तत्वं नं दातव्यं दुरात्मने ॥

## विनियोगः-

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय कवचस्य श्री भैरव ऋषि । गायत्री छन्दः। श्री मृत्युञ्जय रुद्रो देवता । ॐ बीजम् जूं शक्तिः । सः



कीलकम । हौं इति तत्त्वम् । चतुर्वर्गफल-साधने पाठे विनियोगः।

ॐ चन्द्रमण्डल मध्यस्थे रुद्रमाले विचित्रिते ।
तत्रस्थं चिन्तयेत्साध्यं मृत्युं प्राप्तोपि जीवति ॥

ॐ जूं सः हौं शिरः पातु देवो मृत्युञ्जयो मम्।
श्री शिवो वै ललाटं च ॐ हौं भ्रुवो सदाशिवः॥

नीलकण्ठोवतान्नेत्रे कपर्द्दी मेऽवताच्छ्रुति ।
त्रिलोचनोऽवतां गण्डौ नासां में त्रिपुरान्तकः॥

मुखं पीयूषघटभृदोष्टौ मे कृत्तिकाम्बरः।
हनुं मे हाटकेशानो मुखं वटुक भैरवः ॥

कन्धरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु ।
स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु ॥

नखान्मे गिरिजानाथः पायांदंगुलि संयुतान् ।
स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम् ॥

कुक्षिं मे कुबेरवदनः पार्श्वौ मे मारशासनः।
शर्वं पातु तथा नाभिं शुली पृष्ठं ममाऽवतु ॥

शिश्नं मे शङ्करः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः
कटिं कालान्तकः पायादूरू मेंधक घातक ॥
जागरूकोऽवताज्जानू जंघे मे काल भैरवः ।
गुल्फौ पायाजटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु ॥

पादादि मूर्द्धपर्यन्तं सद्यो जातो ममावतु ।
रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृतेश्वरः ॥

पूर्वं बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः ।

पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मः ॥
ऐशान्यामीश्वरः पायादाग्नेयामग्निलोचनः ।
नैर्ऋत्या शम्भुख्यान्मां वायव्यां वायु वाहनः ॥
उर्ध्वं बल प्रमथनः पाताले परमेश्वर ।
दशदिक्षुदासपातु महामृत्युञ्जयश्च माम ॥
रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये ।
पायादो जूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षरः ॥
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु ।
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः ॥
अर्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः ।
सर्वदा सर्वतः ॐ जूं सः हौं मृत्युञ्जयः ॥१९॥
इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु गोपितम् ॥
पूण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवादि दैवतम् ।
य इदं च पठेन्मन्त्रं कवचं वाचयतेत्ततः ॥
तस्य हस्ते महादेवी त्र्यम्बकस्याष्टसिद्धयः ।
रणे धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वा शत्रुञ्जयं लभेत् ॥
जपं कृत्वा गहे देवि सम्प्राप्स्यति सुखं पुनः ।
महाभये महारोगे महामारीभये तथा ॥
दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत्कवचमादरात ।

॥ इतिमहामृत्युञ्जय कवचं समाप्तम् ॥

卐 卐 卐



## अथ संतानगोपाल मंत्र प्रयोगः-

ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥
विनियोग : अस्य संतान गोपाल मन्त्रस्य नारद ऋषिः।
अनुष्टुप् छन्दः । कृष्णो देवता । मम ( यजमानस्य )
पुत्र कामनार्थं जपे विनियोगः ॥

### ऋष्यादिन्यास-

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि ।
ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे । ॐ कृष्णो देवतायै
नमः हृदि । ॐ विनियोगाय नमः-सर्वाङ्गे ॥

### करन्यास :-

ॐ देवकीसुत-अंगुष्ठाभ्याम् नमः । ॐ गोविन्द-तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ वासुदेव-मध्यमाभ्यां नमः । ॐ जगत्पते अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ देहिमे तनयं कृष्ण-कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥
ॐ त्वामहं शरणं गतः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

### हृदयादि षडङ्गन्यासः-

ॐ देवकी सुत हृदयाय नमः । ॐ गोविन्द-शिरसे स्वाहा ।
ॐ वासुदेव शिखायै वषट् । ॐ जगत्पते कवचाय हूम् ।
ॐ देहि मे तनयं कृष्ण-नेत्रत्रयाय नौषट् ।
ॐ त्वामहं शरणं गतः करतलकर पृष्ठाभ्याम् अस्त्रायफट् ।

## ध्यान् :-

**ऊँ विजयेन युतो रथस्थितः प्रसमानीय समुद्र मध्यतः ।**
**प्रददत्तनयान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेवनन्दनः ॥**

ध्यान करने के बाद वाह्य पूजा करें ।

**ऊँ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः ।**
**इससे पूजा करके नवपीठ शक्तियों की इस प्रकार पूजा करें । पूर्वादि क्रमेण-ऊँ विमलायै नमः । ऊँ उत्कर्षिन्यै नमः। ऊँ ज्ञानायै नमः। ऊँ क्रियायै नमः । ऊँ योगायै नमः । ऊँ प्रह्वयै नमः । ऊँ सत्यायै नमः । ऊँ ईशानायै नमः । मध्ये- ऊँ अनुग्रहायै नमः ॥ ऊँ नमो भगवते श्री गोपालाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्म संयोग पद्मपीठात्मने नमः ।**
**ऊँ संविन्मयः परोदेवः परामृतरसप्रियः।**
**अनुज्ञां देहि गोपाल परिवारार्चनाय मे ॥**
**ऊँ देवकीसुत ह्रदयाय नमः। ह्रदय श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः।**
**ऊँ गोविन्द शिरसे स्वाहा । शिरः श्री पादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः।**
**ऊँ वासुदेव शिखायै वषट्। शिखा श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः।**
**ऊँ जगत्पते कवचाय हूम् । कवच श्री पादुकां पूजयामितर्पयामिनमः।**
**ऊँ देहिमे तनयं कृष्ण नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

इससे पुष्प चन्दन के द्वारा षडङ्गो की पूजा करके। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके ।

**ऊँ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।**
**भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥**



यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर पूजितास्तर्पिताः सन्तु यह कहे। इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार दक्षिणादि दिशाओं की कल्पना करके यन्त्रादि में अष्टदलों की पूजा करें-

**ऊँ कालिन्द्यै नमः। कालिन्दी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः॥१॥**
**ऊँ नाग्नजित्यै नमः। नाग्नाजिती श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः॥२॥**
**ऊँ मित्रविन्दायै नमः मित्रविन्दा श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः॥३॥**
**ऊँ चारुहासिन्यै नमः। चारु हासिनी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः॥४॥**
**ऊँ रोहिण्यै नमः। रोहिणी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः॥५॥**
**ऊँ जाम्बवत्यै नमः। जाम्बवती श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः॥६॥**
**ऊँ रूक्मिण्यै नमः। रूक्मिणी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः॥७॥**
**ऊँ सत्यभामायै नमः । सत्यभामा श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः॥८॥**

इस प्रकार आठों पटरानियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इसके बाद प्राची क्रम से-

**ऊँ ऐरावताय नमः । ऊँ पुण्डरीकाय नमः। ऊँ वामनाय नमः । ऊँ कुमुदाय नमः । ऊँ अञ्जनाय नमः । ऊँ पुष्पदन्ताय नमः। ऊँ सार्वभौमाय नमः । ऊँ सुप्रतीकाय नमः।**

इससे आठोदिग्गजों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । पुनः गोपाल की पूजा करके जप प्रारम्भ करें ।

卐 卐 卐

## अथ बगलामुखी देवी मन्त्रप्रयोग

प्रथम आचमनादि करके पीला फूल हाथ में लेकर कूर्म मुद्रा से भगवती बगला का ध्यान करें ।

**ऊँ मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डप रत्नवेद्यां,**
**सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णाम् ।**
**पीताम्बरा भरण माल्य-विभूषिताङ्गीं,**
**देवीं स्मरामि धृत मुद्गर-वैरिजिह्वाम् ।**
**जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं**
**वामेन् शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।**
**गदाभिघातेन च दक्षिणेन,**
**पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ।**

ध्यान करके उस पुष्प को अपने मस्तक पर रखकर मानसोपचार पूजन करके हाथ में जल लेकर बगलामुखी मन्त्र का उच्चारण कर विनियोग पाठ करें।

### मन्त्र-

**ऊँ ह्रीं बगलामुखि ! सर्वदुष्टानां वाचंमुखं पदं स्तम्भय । जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्रीं ऊँ स्वाहा ॥**

### विनियोग-

**ऊँ बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः बगलामुखी देवता ह्रीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ममाऽभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ जल छोड़ें ।**



### ऋष्यादि न्यास :-

**ऊँ नारद ऋषये नमः-शिरसि । ऊँ त्रिष्टुप्छन्दसे नमः-मुखे। ऊँ बगलामुख्यै देवतायै नमः-हृदि । ऊँ ह्रीं बीजाय नमः-गुह्ये। ऊँ स्वाहा शक्त्यै नमः-पादयोः ॥**

### करन्यास :-

**ऊँ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ऊँ बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा । ऊँ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् । ऊँ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हूम। जिह्वां कीलयकीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट। ऊँ बुद्धिं नाशय ह्रीं ऊँ स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।**

### हृदयादि न्यासः-

**ऊँ ह्रीं हृदयाय नमः। ऊँ बगलामुखि ! शिरसे स्वाहा । ऊँ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् । ऊँ वाचं मुखं पदं स्तम्भय- कवचाय हूम्। ऊँ जिह्वां कीलयकीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । ऊँ बुद्धिं नाशय ह्रीं ऊँ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥**

### ततो मन्त्राक्षर न्यासः-

**ऊँ नमः मूर्ध्नि । ऊँ ह्रीं नमः-भाले । ऊँ बं नमः-दक्षिण नेत्रे । ऊँ गं नमः-मूर्ध्नि । ऊँ लां नमः-दक्षिण कर्णे । ऊँ मुं नमः वाम कर्णे ऊँ खीं नमः-दक्षिण कपोले । ऊँ सं नमः-वाम कपोले। ऊँ र्वं नमः-दक्षिणनासापुटे। ऊँ दुं नमः- वामनासापुटे । ऊँ ष्टां नमः-उर्ध्वोष्ठे**

ऊँ नां नमः-अधरोष्ठे । ऊँ वां नमः-मुखवृत्तौ। ऊँ चं नमः-दक्षिण स्कन्धे ऊँ मुं नमः-वाम स्कन्धे । ऊँ खं नमः-दक्षिण कूर्परे । ऊँ पंन्नमः-दक्षिण मणिबन्धे । ऊँ दं नमः-दक्षिणाङ्गुलिमूले । ऊँ स्तं नमःगले ऊँ भं नमः-दक्षिणस्तने । ऊँ यं नमः-वामस्तने । ऊँ जिं नमः-हृदि। ऊँ ह्वां नमः-नाभौ । ऊँ कीं नमः-कटिभागे। ऊँ लं नमः-गुह्ये। ऊँ यं नमः-वामकूर्परे। ऊँ बुं नमः-वाममणिबन्धे । ऊँ द्धिं नमः-वाम अंगुलिमूले । ऊँ वीं नमः-ऊरौ। ऊँ नां नमः-जंघयोः। ऊँ शं नमः-गुल्फे। ऊँ यं नमः-अंगुलिमूले । ऊँ स्वाहा नमः-सर्वाङ्गे।

पुनः भगवती का ध्यान करके षोडशोपचार या पञ्चोपचार से बाह्य पूजन कर माला की पूजा कर जप प्रारम्भ करें, जप समर्पण कर स्तोत्र कवच का पाठ करें ।

卐 卐 卐



## बगलामुखी स्तोत्र कवच प्रारम्भ :-

अथ बगलामुखीस्तोत्रम्

### विनियोग :

ऊँ अस्य श्री बगलामुखीस्तोत्रस्य नारदऋषिः श्री बगलामुखी देवता, मम सन्निहितानां वाङ्-मुख-पद-बुद्धीनां स्तम्भनार्थे विनियोगः।

### ध्यानम्

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लसिनीं
हेमाभाङ्गरुचि शशाङ्क-मुकुटां सच्चम्पक-स्रग्युताम् ।
हस्तैर्मुद्गर-पाश-बद्ध-रसनां संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥
मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्नवेद्यां
सिंहासनोपरि-गतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं
देवीं भनामि धृत-मुद्ग र-वैरिजिह्वाम् ॥१॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्
गदाभिघातेन च दक्षिणेन

पीताम्बराढ्यां द्विभुजां भजामि ॥२॥

चलत्कनक-कुण्डलोल्लसित-चारु-गण्डस्थलां
लसत्कनक-चम्पक-द्युति-मदिन्दु-बिम्बाननाम् ।
गदाहत-विपक्षकां कलित-लोल जिह्वां चलां
स्मरामि बगलामुखीं विमुख-वाङ्-मनःस्तम्भिनीम् ॥३॥

पीयूषोदधि-मध्य-चारु-विलस-द्रक्तोत्पले मण्डपे
सत्सिंहासन-मौलि-पातित-रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्
स्वर्णाभां कर-पीडितारि-रसनां भ्राम्यद् गदां विभ्रमा-
मित्थं ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ॥४॥

देवि! त्वच्चरणाम्बुजाऽर्चनकृते यः पीत-पुष्पाञ्जलीं
भक्त्या वामकरे विधाय च जपन् मन्त्र मनोज्ञाक्षरम्
पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं
तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ॥५॥

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वविद्य जडति त्वद्न्त्रणा यन्त्रितः
श्रीनित्ये! बगला-मुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः॥६॥

मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलनं स्तोत्रं पवित्रं च ते
यन्त्रं वादि-नियन्त्रणं त्रिजगती जैत्रं च चित्रं च ते ।
मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्याऽस्ति जन्तोर्मुखे
तन्नामग्रहणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेत् वादिनाम् ॥७॥



दुष्ट-स्तम्भन-मुग्र विघ्न-शमनं दारिद्र्य-विद्रावणं
भूभृद्-भी शमनं चलन् मृगदृशां चेतः समाकर्षणम् ।
सौभाग्यैक-निकेतनं मम दृशः कारुण्यपूर्णामृतः
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥८॥

मातर्भञ्जय मे विपक्ष-वदनं जिह्वां च संकीलय
ब्राह्मीं मुद्रय नाशयाऽऽशु धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय
शत्रूंश्चूर्णय देवि ! तीक्ष्ण-गदया गौराङ्गि! पीताम्बरे!
विघ्नौघं बगले ! हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ! ॥९॥

मातर्भैरवि! भद्रकालि! विजये ! वाराहि! विश्वाश्रये!
श्रीविद्ये समये! महेशि! बगले! कामेशि! रामे! रमे!
मातङ्गि! त्रिपुरे! परात्परतरे! स्वर्गापवर्गप्रदे !
दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि! त्राहि माम् ॥१०॥

संरम्भे चौरसङ्घे प्रहरण-समये बन्धने वारिमध्ये
विद्यावादे विवादे प्रकुपित-नृपतौ दिव्यकाले निशायाम्।
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवध-समये निर्जने वा वने वा
गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ॥११॥

नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद्
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले ।
राजानोऽप्यरवो मदान्धकरिणः सर्पा मृगेन्द्रादिका-
स्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीःस्थिराः सिद्धयः ॥१२॥

त्वं विद्या परमा त्रिलोक-जननी विघ्नौघ-सञ्छेदिनी
योषाकर्षण-कारिणी त्रिजगतांमानन्दसंवर्द्धिनी ।
दुष्टोच्चाटन-कारिणी जनमनः सम्मोह-संदायिनी
जिह्वा-कीलन-भैरवी विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा ॥१३॥

विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः
पुत्रैः पौत्रैः सर्व-साम्राज्य-सिद्धिः।
मानं भोगो वश्य-मारोग्य-सौख्यं
प्राप्तं तत् तद् भूतलेऽस्मिन् नरेण ॥१४॥

यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि!
दुष्टानां निग्रहार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तु ते ॥१५॥

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥१६॥

पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्ज्वलाम् ।
शिला-मुद्गर हस्तां च स्मरेत्तां बगलामुखीम् ॥१७॥

इति रुद्रयामलस्थ-बगलामुखीस्तोत्रं समाप्तम् ।

卐 卐 卐



## अथ बगलामुखीकवचम्

कैलासाचल-मध्यगं पुरवह शान्तं त्रिनेत्रं शिवं
वामस्था कवचं प्रणम्य गिरिजा भूतिप्रदं पृच्छति।

पार्वत्युवाच-

देवी श्रीबगलामुखी रिपुकुलारण्याग्निरूपा च या ।
तस्याश्चाप-विमुक्त-मन्त्रसहितं प्रीत्याऽधुना ब्रूहि माम् ॥१॥

श्री शङ्कर उवाच-

देवि! श्रीभववल्लभे! श्रृणु महामन्त्रं विभूतिप्रदं
देव्या वर्मयुतं समस्त-सुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदम् ।
तारं रुद्रवधूं विरञ्चि-महिला-विष्णुप्रिया-कामयुक्
कान्ते! श्रीबगलानने! मम रिपुं नाशाय युग्मं त्विति ॥२॥

ऐश्वर्याणि पदं च देहि युगलं शीघ्रं मनोवाञ्छितं
कार्यं साधय युग्मयुक्छिववधू वह्निप्रियान्तो मनुः ।
कंसारेस्तनयं च बीजमपरा शक्तिश्च वाणी तथा
कीलं श्रीमति! भैरवर्षिसहितं छन्दोविराट्संयुतम् ॥३॥

स्वेष्टार्थस्य परस्य वेत्ति नितरां कार्यस्य सम्प्राप्तये
नानासाध्य-माहगदस्य नियतं नाशाय वीर्याप्तये ।
ध्यात्वा श्रीबगलाननां मनुवरं जप्त्वा सहस्राख्यकं

दीर्घैः षटकयुतैश्च रुद्रमहिला बीजैर्निवेश्याङ्गके ॥४॥

## ध्यानम्

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं
हेमाभाङ्गरुचि शशाङ्क-मुकुटां सच्चम्पक-स्रग्युताम् ।
हस्तैर्मुद्ग र-पाशबद्ध-रसनां संबिभ्रतीं भूषणै
र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥

## विनियोगः

ॐ अस्य श्रीबगलामुखी ब्रह्मास्त्रमन्त्रस्य भैरवऋषिर्विराट् छन्दः श्री बगलामुखीदेवता, क्लीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्रीं कीलकं मम परस्य च मनोऽभिलषितेष्ट कार्यसिद्धये विनियोगः।

## ऋष्यादिन्यासः

शिरसि भैरवऋषये नमः। मुखे विराट्छन्दसे नमः। हृदि बगला मुखीदैवतायै नमः । गुह्ये क्लीं बीजाय नमः पादयोः ऐं शक्तये नमः। सर्वाङ्गे श्रीं कीलकाय नमः।

दाहिने हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य श्रीबगलामुखी ब्रह्मास्त्रमन्त्रस्य' से 'विनियोगः' तक कहकर जल छोड़ दे ।

उसके बाद 'शिरसि भैरवऋषये नमः' से 'श्री कीलकाय नमः'



तक उचारण कर ऋष्यादि न्यास करे ।

## करन्यासः

ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः! ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

## हृदयादिन्यासः

ॐ ह्रां हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रूं शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं कवचाय हूम् । ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

## मन्त्रोद्धारः

ॐ ह्रौं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने ! मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छितकार्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा ।

शिरो में पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम् ।
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्रीबगलानने ! ॥१॥

श्रुती मम रिपून् पातु नासिकां नाशयद्वयम्।
पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्यं तु मस्तकम् ॥२॥

देहि द्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम ।
कण्ठदेशं स नः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम् ॥३॥

कार्यं साधय द्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम ।
मायायुक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ॥४॥

अष्टाधिकचत्वारिंशद् दण्डाढ्या बगलामुखी ।
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ॥५॥

ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वाङ्गे सर्वसन्धिषु ।
मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ॥६॥

ॐ ह्लीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु ।
मुखी वर्णद्वयं पातु लिङ्गं मे मुष्कयुग्मकम् ॥७॥

जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम् ।
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णा परमेश्वरी ॥८॥

जङ्घा-युग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी ।
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम ॥९॥

जिह्वां वर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च ।
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम ॥१०॥

विनाशय पदं पातु बुद्धीन्दियवचांसि मे ।
ह्लीं बीजं सर्वदा पातु पादाङ्गुल्योर्नखानि मे ॥११॥

सर्वाङ्गं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु ।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाऽग्नेय्यां विष्णुवल्लभा ॥१२॥

माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु ।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ॥१३॥

वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ।



ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ॥१४॥

इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च स-वाहनाः ।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ॥१५॥

श्मशाने जलमध्ये च भैरवाश्च सदाऽवतु ।
द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः ॥१६॥
योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम ।
इति ते कथितं देवि! कवचं परमाद्भुतम् ॥१७॥

श्री विश्वविजयं नाम कीर्ति-श्री विजयप्रदम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम् ॥१८॥

निर्धनो धनमाप्नोति कवचस्याऽस्य पाठतः ।
जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्रीबगलामुखीम् ॥१९॥

पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात्तु यः ।
यत् यद् कामयते कामं साध्याऽसाध्ये महीतले ॥२०॥

तत्तत्काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शङ्करि ।
गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रौ शक्तिसमन्वितः ॥२१॥

कवचं यः पठेद् देवि! तस्याऽसाध्यं न किञ्चन ।
यं ध्यात्वा प्रजपेन्मन्त्रं सहस्त्रं कवचं पठेत् ॥२२॥

त्रिरात्रेण वशं याति मृत्युं तं नाऽत्र संशयः ।
लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः स-तालेन हरिद्रया ॥२३॥

लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन्मनुम् ।
एकविंशद्दिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्त्रकम् ॥२४॥

जप्त्वा पठेत्तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम् ।
संस्तम्भो जायते शत्रोर्नाऽत्र कार्या विचारणा ॥२५॥

विवादे विजयस्तस्य सङ्ग्रामे जयमाप्नुयात् ।
श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः ॥२६॥

नवनीतं चाऽभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान् महेश्वरि! ।
बन्ध्यायां जायते पुत्रो विद्या-बल-समन्वितः ॥२७॥

श्मशानाङ्गारमादाय भौमे रात्रौ शनावथ ।
पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेल्लौह-शलाकया ॥२८॥

भूमौ शत्रोः स्वरूपं च हृदि नाम समालिखेत् ।
हस्तं तद्धृदये दत्वा कवचं तिथि-वारकम् ॥२९॥

ध्यात्वा जपेन्मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः ।
म्रियते ज्वरदाहेन दशमेऽह्नि न संशयः ॥३०॥

भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगन्धेन संलिखेत् ।
धारयेद्दक्षिणे बाह्रौ नारी वामभुजे तथा ॥३१॥

सङ्ग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत् ।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम् ॥३२॥

सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत् ।
वृहस्पतिसमो वाऽपि विभवे धनदोपमः ॥३३॥

कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपमः ।
कवितालहरी तस्य भवेद् गङ्गा प्रवाहवत् ॥३४॥

गद्य-पद्यमयी वाणी वेद् देवी प्रसादतः ।
एकादशशतं यावत्पुरश्चरणमुच्यते ॥३५॥



पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम् ।
न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः ॥३६॥

देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चाऽन्यथाऽऽप्नुयात् ।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम् ।
शतकोटि जपित्वाऽपि तस्य सिद्धिर्न जायते ॥३७॥

दाराढ्यो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां
विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम् ।
ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेऽष्टगन्धेन वै
धृत्वा राजपुरं व्रजन्ति खलु ये दासोऽस्ति तेषां नृपः ॥३८॥

इति विश्वसारोद्धारतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे
बगलामुखीकवचं समाप्तम् ।

卐 卐 卐

## शिव मन्त्र "ऊँ नमःशिवाय" जप का साङ्गोपाङ्ग विधिः

### जप कैसे करना चाहिए-

कोई भी यज्ञोपवीति दीक्षित व्यक्ति सन्ध्या वन्दनादि करके पूजन सामग्री एकत्र करलें जैसे-गंगाजल (जल) फूलमाला, बेलपत्र, अक्षत, तिल, चन्दन (अबीर) हर्रे, घी, रूई, दीपक, अगरबत्ती, मौली, जनौ, पान, सुपाड़ी, कुश, आसन, कोसी पंचपात्र पूजन का छिपली सलाय इत्यादि।

प्रथम तिलकादि करके, शुद्धासन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर तिलक करके शिखा बांधकर सन्ध्या वन्दनादि से निवृत्त होकर धूपदीप जलाकर-

### तीनबार आचमन करें-

ऊँ केशवाय नमः । ऊँ नारायणाय नमः । ऊँ माधवाय नमः होंठ पोंछकर बोलें ऊँ हृषीकेशाय नमः। हाथ धो लें । बांये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ के तत्वमुद्रा से (अंगूष्ठा अनामिका मिलाकर) मस्तक पर मन्त्र बोलते हुवे छिड़कें-

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरःशुचिः।।
ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। सभी सामानों पर भी जल छिड़क दें।

### आसन शुद्धि-

आसन के नीचे की भूमि छूते हुए-
ऊँ अस्यासनोपवेशन मन्त्रस्य मेरू पृष्ठ ऋषिः।
सुतलं छन्दः कुर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।।



### हाथ जोड़कर-

ऊँ पृथ्वीत्वया धृतालोका देवित्वं विष्णुनाधृता ।
त्वञ्च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरु चासनम् ।।

### भूत शुद्धिः- ह्रौं १०८

अक्षत या सरसों लेकर दशो दिशाओं में छिड़कें नाराच मुद्रा से

**ऊँ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता ।**
**ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।**

तत्पश्चात पात्र में स्वस्ति (卐) बनाकर दो कसैली में मौली बांधकर स्वस्तिका पर रखें उसके बाद हाथ में पुष्पाक्षतादि लेकर स्वस्ति वाचन पाठ करें । स्वस्तिवाचन मन्त्राः-

**ऊँ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासोऽअपरीतास ऽउद्भिदः।**
**देवानो यथा सदमिद् वृधेऽ असन्न प्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।१।।**

**देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ँ रातिरभिनोनिर्वर्त्तताम्**
**देवानां ँ सख्यमुपसेदिमाव्वयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।।**

**तानपूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्।**
**अर्य्यमणंव्वरूण ँ सोममश्विना सरस्वतीनः सुभगामयस्करत् ।**

**तन्नो व्वातो मयोभुव्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।**
**तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्।।**

**तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंधियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।**

पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धःस्वस्तये ॥

स्वस्तिन इन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा व्विश्ववेदाः ।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यावानोव्विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसोव्विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह॥

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम् देवाभद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ७ँ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥८॥

शन्नमिन्नु शरदोऽअन्ति देवायत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्तिमानो मद्ध्या रीरिषता युर्गन्तोः॥

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता सपिता स पुत्रः।
विश्वेदेवाऽ अदितिः पञ्चजनाऽ अदितिर्ज्जा तमदितिर्ज्जनित्वम्
द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ँ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्ति रोषधयः
शान्तिः । व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्ति :

सर्व्वं ७ँ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥११॥
यतोयतः समीहसे ततो नोऽ अभयं कुरु ।
शन्नः कुरु प्प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥
गणानात्वा गणपति ७ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ७ँ हवामहे
निधीनां त्वा निधिपति ७ँ हवामहे व्वसो मम।
आहमजानि गर्भधमात्वमजासिगर्भधम् ।
अम्बेऽ अम्बिकेऽ म्बालिके न मानयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।
ॐ सुशान्तिर्भवतु ॥ पुष्पाक्षत गणेशाम्बिका वा पत्ता पर छोड़ दें।



हाथ जोड़कर-

ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः । ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः । ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः । ॐ मातृपितृचरण कमलेभ्यो नमः । ॐ इष्ट देवताभ्यो नमः । ॐ कुलदेवताभ्यो नमः । ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः । ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । ॐ सर्वाभ्योदेविभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । ॐ एतत् कर्म प्रधान देवता अमुक देवाय नमः ) साम्बसदाशिवाय नमः ॥ इति नमस्कृत्य ॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥३॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनंध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥४॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥५॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥६॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्तितेषाममङ्गलम् ।

येषां हृदिस्थो भगवान मङ्गलायतनो हरिः ॥७॥

तदेवलग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥९॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्धुवा नीतिर्मतिर्मम ॥१०॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥११॥

स्मृतेसकलकल्याणभाजनं यत्र जायते ।
पुरूषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥१२॥

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः ॥१३॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशी गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥१४॥

वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥१५॥

विनायकं गुरूंभानुं ब्रह्मविष्णु महेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यर्थ सिद्धये ॥१६॥

ॐ सोमंराजानं वरुणमग्निमम्बारभामहे ।
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणञ्च वृहस्पतिम् ॥१७॥

ॐ पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजा समेतम्



सुराऽसुराराधित पादपद्मं श्री बैद्यनाथंतमऽहम् नमामि ।

## प्रणाम करके सङ्कल्प वाक्य बोलें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यश्री ब्रह्मणोह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगस्य कलि प्रथमचरणे जम्बु द्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैक देशान्तर्गते अङ्ग प्रदेशे गंगायाः दक्षिणदिग्भागे सागरस्य उत्तरस्यां हरितकीवने विक्रमशके बौद्धावतारे अमुक संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशिस्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते भौमे अमुके राशिस्थिते बुधे अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा स्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण विशिष्टायां शुभपुण्यवेलायां अमुक गोत्रः ( स्वार्थे प्रथमान्तः-गोत्रः, परार्थे-षष्ठ्यन्तः-गोत्रस्य ) अमुक शर्मा ( प्रथमायां-वर्माऽहम्-षष्ठ्यां शर्म्मणः वर्म्मणः गुप्तस्य, दासस्य ) ममशरीरोपस्थित जन्मकालिक जन्मलग्नावधिक वर्षकालिक वर्षलग्नावधिक गोचर कालिक गोचर लग्ना वधिक संसूचितं संसूचयिष्यमाणं यत्र तत्र दुष्टस्थान स्थित सूर्यादिनवग्रहोपग्रह शान्त्यर्थं कायिक वाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञात इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलपापक्षयार्थं चतुर्थ अष्टम् द्वादशभाव स्थित् केचित् विरुद्ध क्रूर ग्रहाः तैःशान्त्यर्थं तृतीय एकादशभावस्थित शुभग्रहफलप्राप्त्यर्थं वाह्याभ्यन्तर सकल शत्रून् पराजयार्थं दैहिक दैविक भौतिक आधिदैविक आधिभौतिक पञ्चविधताप परिहारार्थं श्री श्री अमुक देव प्रसादात् दीर्घायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं धन-

**धान्य समृद्ध्यर्थं ( व्यापारे महतीलाभार्थं भूमि भवन** वाहनादि **प्राप्त्यर्थं ) अप्राप्त लक्ष्मीः प्राप्त्यर्थं तस्याः लक्ष्म्याः** चिरकाल **संरक्षनार्थञ्च श्री श्री अमुक देव प्रीत्यर्थं अमुक मन्त्रस्य सपादलक्ष ( अमुक सहस्र लक्षवा ) संख्यकजपं तथा च ( हवनादि** विकल्पे **तद्दशांश द्विगुणितंकृत्य ब्राह्मण द्वारा ( यथा संख्यक ब्राह्मणैः ) अद्यारभ्ययथाकाल पर्यन्तमहं कारयिष्ये ( परार्थे-कारयिष्यामि ) अक्षततिल गणेश अम्बिका पर छोड़े ।**

**नोट :** यदि जप करने वाला स्वयं अपने लिये जप करता है एवं स्वयं फल चाहता है तो कर्त्ता में प्रथमा एवं क्रिया में करिष्ये का प्रयोग करें। यदि संकल्प स्वयं करे दूसरे के कल्याण के लिए तो कर्त्ता में षष्ठी का प्रयोग करें एवं क्रिया में करिष्यामि, यदि संकल्प करने वाला दूसरे ब्राह्मण से करावे एवं स्वयं का ना होकर दूसरे का कल्याण चाहता है तो कर्त्ता में षष्ठी एवं क्रिया में कारयिष्यामि बोलें, यदि संकल्प करने वाला दूसरे से जपादि कर्म करवाता है तो क्रिया में णिजन्त अर्थात् स्वयं फल प्राप्ति में कारयिष्ये दूसरे के फल प्राप्ति में कारयिष्यामि का प्रयोग करें । पुनः हाथ में अक्षत जल लेकर बोलें-तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं अमूकदेव पूजनं ब्राह्मण वरणञ्चाहं करिष्ये। अक्षत जल छोड़ें।........पुनः अक्षत लेकर-

**ॐ यज्जाग्रतोदूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्य तथैवैति ।**
**दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमनः शिव सङ्कल्पमस्तु ॥**

अक्षत छोड़े। हाथ जोड़कर-

**ॐ मन्त्रार्थाः सफलासन्तु पूर्णाः सन्तुमनोरथाः।**
**शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥**



## अयं कर्मारभ्यः शुभाय भवतु ॥

तत्पश्चात् गणेशाम्बिका का आवाहन पूजन करें ।
श्री गणेश का ध्यान-

**ॐ एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।**
**पाशाङ्कुशधरंदेवं मोदकान्विभ्रतङ्करैः ॥**
**रक्तपुष्पमयीम्मालाङ्कण्ठे हस्ते परां शुभाम् ।**
**भक्तानां वरदं सिद्धिबुद्धिभ्यां सेवितं सदा ॥**
**सिद्धिबुद्धिप्रदं नृणान्धर्मार्त्थकाममोक्षदम् ।**
**ब्रह्मरूदहरीन्दाद्यैस्संस्तुतम्परमर्ष्बिभिः ॥**

श्री दुर्गा ध्यान-

**ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां ।**
**कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेवितां ॥**
**हस्तैश्चक्रगदासिखेट विशिखाश्चापं गुणं तर्जनीं ।**
**विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गांत्रिनेत्रां भजे ॥**

इस प्रकार गणेश अम्बिका का ध्यान करके पूजन करके ब्राह्मणों का वरण करें । हाथ में धोती, चादर, आसन, कोसी, पञ्चपात्र, पान, सुपाड़ी, जनौ, पैसा, अक्षत, कुश अंगुठी ( पवित्री ) गोमुखी, रुद्राक्षमाला इत्यादि लेकर ब्राह्मण का वरण करें ।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः अमुक शर्माऽहम ( वर्माऽहम गुप्तोऽहम ) मत् सङ्कल्पिते ॐ नमः शिवाय इति पञ्चाक्षरी श्री शिवमन्त्रस्य सपाद लक्ष जप कर्मणि एभिः विष्टर ताम्बूल पूगीफलपुष्पाक्षत अंगुलीयक यज्ञोपवीतद्रव्यवस्त्रादिभिः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्रह्मणं अद्यारभ्य

यथाकाल पर्यन्तं जप कर्मकर्त्तुम् भवन्तमहं वृणे ॥ ( २ब्राह्मणों में-अमुक गोत्रौ अमुक शर्माणौ ब्राह्मणौ भवन्तौ अहं वा भवन्तावहं वृणे ) । उससे अधिक ब्राह्मणों के होने पर अमुक गोत्रान् अमुक शर्म्मणः भवतः अहं वृणे एक ब्राह्मणमें वृतोऽस्मि २ ब्राह्मणों में वृतास्वः दो से अधिक ब्राह्मणों में वृताः स्मः इति प्रतिवचनम् ॥

१. में - यथा विहीतं कर्म कुरु-यथाज्ञानं करवाणि इति प्रतिवचनम्

२. में - यथाविहीतं कर्मकुरुतम्-यथाज्ञानं करवाव ।

३. बहुसंख्यक में-यथाविहीतं कर्म कुरुत-यथा ज्ञानं करवाम ॥

**ततः ब्राह्मणानां हस्तेषु रक्तसूत्रेण ( मौलिना )**
**रक्षा बन्धनं तिलकादिकं कुर्यात् ।**
**ततः यजमानानामपि हस्तेषु रक्षाबन्धनं कुर्यात् ॥**
**तत्पश्चात् न्यासादिकं कृत्वा शिवमन्त्र जपं कुर्यात्**

## यथा स्थान पूजादि सामग्री को स्थापति कर धूप-दीप जलाकर हाथ में सचन्दन फूल लेकर कूर्म मुद्रा से भगवान शंकर का ध्यान करें

### ध्यानम्

**ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारु चन्द्रा वतंसं।**
**रत्नाकल्पो ज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।**
**पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं**
**विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रंत्रिनेत्रम् ॥**

ध्यानीय पुष्प को अपने मस्तक पर स्थापित कर नासाग्र से वायु



द्वारा तेजः पुञ्जस्वरूप भगवान शंकर को हृदय कमलपर विराजमान कर मानसिक पूजन करें-

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि ।

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि । ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं तेजसात्मकं दीपं समर्पयामि । ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्र पुष्पं समर्पयामि ॥

हाथ में जल लेकर-

### विनियोग

"ॐ नमः शिवाय" अस्य शिव पञ्चाक्षरी मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। ईशानो देवता। ॐ बीजाय । नमः शक्तिः । शिवायेति कीलकम् । चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपेन्यासे च विनियोगः ।

### ऋष्यादिन्यास :

ॐ वामदेवर्षये नमः-शिरसि । ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः-मुखे । ॐ ईशानदेवतायै नमः-हृदये । ॐ नमः शक्तये नमः-पादयोः । ॐ शिवायेति कीलकाय नमः-नाभौ। ॐ विनियोगा नमः-सर्वाङ्गे । जिस अंग का उच्चारण हुआ है उस अंग का स्पर्श हाथ से करें ।

### अथ हृदयादि न्यासः

ॐ हृदयाय नमः । ॐ नं शिरसे स्वाहा । ॐ मं शिखायै वषट् । ॐ शिं कवचाय हूम् । ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ यं अस्त्राय फट्।

### अथ करन्यास :

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट्।

ॐ शिं अनामिकाभ्यां हूम्। ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ यं करतलकर पृष्ठाभ्याम् अस्त्राय फट् ।

ॐ नमः शिवाय इस मन्त्र से महाव्याहृति करें अपने चारों तरफ चुटकी बजाते हुवे दिक् बन्धन करें प्राणायाम करें १६/६४/३२ मातृका पुटित मन्त्र से ( अकार से क्षकार तक बोलकर बीच में ॐ नमः शिवाय बोलकर विलोम रीति से क्षकार से अकार तक ) मन्त्र शोधन कर पुनः पुष्प लेकर कूर्ममुद्रा से भगवान शंकर जी का ॐ ध्यायेन्नित्यमः इत्यादि से ध्यान कर हृदय कमलपर विराजमान, कल्पित भगवान शंकर को प्रश्वास द्वारा न्रासाग्र से बाहर निकाल हाथ में स्थापित ध्यानीय पुष्प को किसी पात्र पर स्थापित कर आवाहनादि मुद्रा के द्वारा आवाहन प्राण प्रतिष्ठाकर वाह्यपूजा पाद्यादि से पूजनकर माला की पूजा करके जप प्रारम्भ करें ।

## शिवपूजन प्रारम्भः

ध्यान के बाद प्राण प्रतिष्ठा-
ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तन्नो
त्वरिष्टं य्यज्ञꣳ समिमंदधातु । विश्वेदेवा सऽइहमादयन्ता-
मों ३ प्रतिष्ठ ॥ भूर्भुवः साम्बसदाशिवम् आवाहयामि स्थापयामि
पूजयामि ॥ चावल छिड़कें ॥

## आवाहनम्-

दोनो हाथ से आवाहनीयमुद्रा से-
ॐ त्रिपुरान्तकरंदेव चूडाचन्द्र महाद्युतिम् ।
गजचर्म परिधानं शिवमावाहयाम्यहम् ॥
श्री भगवते साम्बसदा शिवाय नमः आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।



## आसनम्-

ॐ विश्वेश्वर महादेव महेशान परात्पर ।
मया समर्पितं रम्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥
आसनार्थे अक्षतानवा पुष्पाणि समर्पयामि ॐ नमः शिवाय नमः

## पाद्यम्-जल से-

ॐ गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्य संयुतम् ।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।
श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः पाद्यं पादयोः समर्पयामि ॥

## अर्घ्यम्-जल से-

ॐ नमस्ते देवदेवेश नमस्ते करुणाम्बुधे ।
करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥
श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः हस्ते अर्घ्यं समर्पयामि ॥

## आचमनीयम्-जल से

ॐ सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मयादत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥
श्री भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि

## स्नानीयम्-जलम्-

ॐ गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः ।
स्नापितोऽसि मयादेव ततः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
श्री भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः स्नानीयं जलं सर्वाङ्गे च समर्पयामि
वस्त्रम् । यज्ञोपवीतम् च समर्पयामि साम्ब सदाशिवाय नमः ।

## गन्धं ( चन्दनम् )

ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
श्री भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः गन्धं, चन्दनं समर्पयामि ।

## अक्षताः-

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।
श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि
( अक्षत चढ़ावें )

## बिल्वपत्र फूल-

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रञ्च त्रयायुधम् ।
त्रिजन्म पापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
पुष्पबिल्वपत्राणि समर्पयामि साम्बसदा शिवाय नमः।

## माला-

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥
श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः इमां पुष्पमालां समर्पयामि ॥

## अबीर-गुलाल-बुक्का-हरिद्राचूर्ण-

ॐ अबीरं च गुलालंच हरिद्रादि समन्वितम् ।



नाना परिमलं द्रव्यं गृहाणपरमेश्वर ॥

## धूपम्-

ॐ वनस्पति रसोद् भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रति गृह्यताम् ॥
श्री भगवते साम्बसदा शिवाय नमः धूपम् आघ्रापयामि ।

## दीपम्-

ॐ साज्यंच वर्तिसयुक्तं वह्निना योजितं मया ॥
दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
श्री भगवते साम्बसदा शिवायनमः दीपं दर्शयामि ( हाथ धोलें )

## नैवेद्यम्-

ॐ नैवेधं गृह्यतां देव भक्तिं में ह्यचलां कुरु ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥
श्री भगवते साम्बसदा शिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि ॥
नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि साम्बसदा शिवाय नमः॥ मुखवासार्थे ताम्बूलं पूगीफलं दक्षिणाद्रव्यञ्च समर्पयामि साम्बसदाशिवाय नमः।
ततः जप प्रारम्भ करें जप के पश्चात् हाथ में जल लेकर-
ॐ गुह्याति गुह्य गोप्तात्वं गृहाणास्मृत कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ।
पुनः न्यास ध्यान पूजन करके, पुष्पाञ्जलि-
फूल लेकर-ॐ नाना सुगन्धिपुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर ॥

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि

## प्रणाम-

ॐ वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरूं वन्दे जगत्कारणम् ।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ॥
वन्दे सूर्यशशाङ्क वह्निनयनं वन्दे मुकुन्द प्रियम ।
वन्दे भक्तजनाश्रयञ्च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ॥

## क्षमा प्रार्थना-

ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ।
हाथ में जल लेकर ॐ अनया पूजया साम्बसदाशिवः प्रीयताम् नमम्, एभिर्जपाख्यानैः साम्बसदाशिवः प्रीयताम् नमम ।

## विसर्जन-

ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकाम प्रसीद्ध्यर्थं पुनरागमनं कुरू ॥
पूजन पात्र को दाहिने हाथ से हिला दें तथा संहार मुद्राका प्रदर्शन करें। तेजः पुञ्जस्वरुप भगवान साम्बसदाशिव का अपने हृदय कमल पर विराजमान करें इति ।

卐 卐 卐

# मन्त्रानुष्ठान प्रकाशः

## शुद्धि पत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| मुख पृष्ठ | ८ | विरचितम् | विरचितम् संकलितञ्च |
| 3 | १ | संकल्पस्य को | संकल्पस्य का |
| 5 | ६ | मुद्राविना | मुद्रांविना |
| 11 | ३ | दधात्तथा | दद्यात्तथा |
| 14 | १२ | ब्रह्मनांश | ब्राह्मणांश |
| 16 | ७ | वार्मा | वर्मा |
| 17 | २ | गायत्रीं छन्दो | गायत्री छन्दो।श्री गणेश देवता |
| 17 | ५ | मुखे के बाद | श्री गणेश देवतायै नमः हृदि |
| 17 | ११ | वषट | वषट् |
| 18 | ३ | दंव्यान | दैत्यान् |
| 20 | २१ | मि नमः वामजाकृते / | वं नमः वामजानुवृत्ते |
| 21 | १८ | उर्वो | उर्वो। |
| 23 | ४ | सिद्धयर्थे | सिध्द्यर्थे |
| 23 | ८ | अङ्गुष्ठाभ्यां | अंगुष्ठाभ्याम् |
| 25 | ६ | मेऽवताछुति | मेऽवताच्छ्रुति |
| 25 | १७ | घातक | घातकः |
| 25 | २२ | पूर्व | पूर्वे |
| 26 | ३ | शम्भुस्थान्मां | शम्भुरक्षेन्मां |
| 26 | ११ | सर्वतः..............ॐ | सर्वतः पातु ॐ |
| 26 | १८ | कवचमादरात | कवचमादरात् |
| 28 | १८ | .......................... | त्वामहम् शरणगतः अस्त्राय फट् ।. अस्त्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 31 | ६ | हूम | हूम् |
| 31 | १२ | —............ | ॐ गं'' नमः हृदि |
| 39 | २ | अंगुष्ठाभ्याम नमः | अंगुष्ठाभ्याम् नमः । |
| 39 | २ | हूं | हूं, मध्यमाभ्यां नमः |
| 40 | ३ | चत्वारिशद् | चत्वारिंशद् |
| 48 | १५ | काशो | काशीं |
| 51 | २२ | ब्रह्मणं | ब्राह्मण |
| 53 | १२ | ॐ विनियोग नमः | विनियोगाय नमः |
| 54 | ८ | ध्यायेनित्यमः | ध्यायेनित्यम् |
| 56 | २ | प्रतिगृह्यताम् | प्रतिगृह्यताम् । |
| 56 | ४ | कुङ्कमाम्ता: | कुंकुमाक्ता। |



तत्रान्तरे- नमस्कारं समुद्धृत्य वान्तं नेत्रसमन्वितम् ।
वरुणं मुखवृत्तं च वायुं ललाट संयुतम् ।
अमुं पञ्चाक्षरं मत्रं पञ्चकाम फलप्रदम् ।
प्रणवादिर्यदा देवि तदामन्त्रः षडक्षरः॥
शिव जी का पञ्चाक्षरी में प्रणव जोड़ने से षडक्षरी मन्त्र कहलाता है।

卐 卐 卐

## अथ शीतलामन्त्र प्रयोगः

चेचक आदि रोगों में शीतला मन्त्र प्रयोग करने से रोगी को शीतलता एवं आराम मिलता है।

### शीतला ध्यानम्-

ॐ दिग्वाससं मार्जनिकांचशूर्पकर द्वये सन्दधती घनाभाम् ।
श्री शीतलां सर्वरुजार्तिनिष्टो रक्ताङ्गरागस्त्रजमर्चयामि ॥

### मन्त्र-

ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः ॥

### विनियोग :-

ॐ अस्य श्री शीतला देवी मन्त्रस्य उपमन्युः ऋषिः। वृहती छन्दः । श्री शीतला देवता ममाभीष्ट- सिद्धयर्थे जपेन्यासे च विनियोगः ॥

### करन्यास :

ॐ ह्रां श्रां अगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रूं श्रूं

मध्यमाभ्यां नमः । ॐ हैं श्रैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ हौं श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ हः श्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।
एवं क्रमेण हृदयादिन्यासं विधाय दिग्वन्धनं महाव्याहृतिं प्राणायामञ्च कृत्वा पुनः ध्यानावाहनवाह्यपूजाञ्च कृत्वा जपं कुर्यात् ॥

卐 卐 卐

यदि पाठकगण को इस पुस्तक से कुछ लाभ मिला तो आगे मैं निम्नलिखित पुस्तकों को वा पद्धतियों को यथा ज्ञान आपलोगों के सामने शीघ्रातिशीघ्र प्रस्तुत करुंगा ।

यथा-गणेश पूजा पद्धति, सरस्वती पूजा, मनसा पूजा, काली पूजा, कार्त्तिक पूजा, दुर्गा पूजा पद्धति, यज्ञ पद्धति, कुम्भविवाह, विष्णु विवाह, गृहारम्भ तथा गृहप्रवेश पद्धति, मन्दिर प्रतिष्ठा पद्धति आदि।

## सतो गुण ग्रहितारो दोषं पश्यन्ति दुर्जनाः ।

सज्जन व्यक्ति दूसरे के गुण को ही ग्रहण करते हैं, दुष्ट व्यक्ति दुसरे में दोष ही देखते हैं ।

**कृतज्ञता ज्ञापन :**

दरभंगा निवासी **श्री परमानंद झा** ( सेवा निवृत, अभियंता ) एवं **श्री राजानाथ झा** ( आपूर्ति पदा० ) ने पुस्तक प्रकाशन में अपना अप्रतिम सहयोग प्रदान किया है जिसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ । -पं० जवाहर लाल करमहे

## ॥ इति शुभम् ॥